नव निकष

2019

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोधपत्र प्रकाशन हेतु अधिकृत राष्ट्रीय शोध पत्रिका

नव विकल्प

हिन्दी साहित्य के नव उत्कर्ष, नव संवेदना और नव भावबोध की प्रतिनिधि मासिकी

आई.एस.एस.एन-०९७५-०८२७

वर्ष-१२, अंक-६, जनवरी २०१९ वि.संवत् २०७५

३ आत्मनेपद - डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय

कसौटी पर किरदार

४ दलित नहीं थे हनुमानजी - अशोक पाण्डेय

साहित्य चिंतन

६ प्रकृति और साहित्य : हिन्दी साहित्य के संदर्भ में - डॉ. अजय कुमार पटनायक

९ डॉ. सत्येन्द्र की लोकतात्विक दृष्टि - प्रो. श्रीनारायण पाण्डेय

११ अन्या से अनन्याः एक हिस्से की सच्चाई - डॉ. अमर सिंह वधान

१८ उपन्यास की लोकप्रियता और सामाजिक अंतरंगता - डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह

२० छन्द का विकसित रूपः सवैया - रामचरण यादव

सामयिकी

१४ आतंकवाद और रामचरितमानस - बद्रीनारायण तिवारी

स्मृति

१६ बाबू गुलाबराय के पत्र शिवपूजन सहाय के नाम - विनोदशंकर गुप्त

शोध लेख

२२ रत्नकुमार सांभारिया की कहानियों में दलित चेतना - डॉ. प्रमिदा के.

२४ अस्तित्व चिंतन और मृत्यु बोध - डॉ. सुरेश ए.

२७ शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्व - चारू रानी

२९ डॉ. शीतांशु की आलोचना दृष्टि - डॉ. वेदप्रकाश दुबे

३४ हिन्दी पत्रकारिता और 'साहित्य वीथिका' - डॉ. संगीता चौहान

३९ 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' उपन्यास में प्रकृति - कस्तूरी चक्रवर्ती

कहानी/लघु कथा

१९ नेता जी का नाम - सत्य सुचि

२३ टी.वी. का बालक - डॉ. लता कादम्बरी

२६ मुआवज़ा - डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय

४२ दुआयें - देवेन्द्र कुमार मिश्र

४६ मशीन - रमेश मनोहरा

४९ दोस्ती - अजीत कुमार दास

व्यंग्य

३८ जनसेवा का सुख - डॉ. सत्यकाम 'शिरीष'

कविता

२१ तीन कविताएं - प्रज्ञा शर्मा

३३ उन दिनों - कन्हैया सिंह 'कान्हा'

४१ गीत - डॉ. हरिप्रसाद शुक्ल 'अलि'

४५ दो गीत - अरविंद अवस्थी

४८ कोई गंगा जैसा गंभीर मिले - रामावतार त्यागी

५१ कबिरा एक सवाल है - नरेश शांडिल्य

५२. **पुस्तक समीक्षा**

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं। सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

शोध लेख

रत्न कुमार सांभरिया की कहानियों में दलित संवेदना

● डॉ. प्रमिदा के.

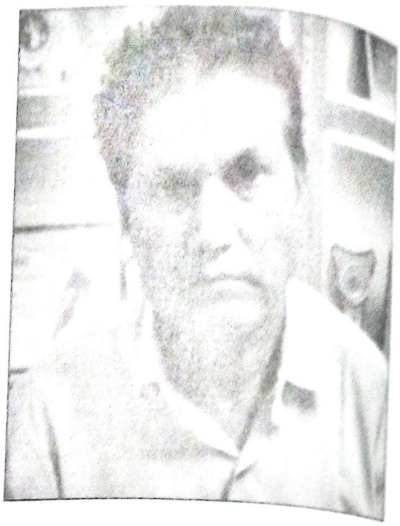

इक्कीसवीं सदी में दलित साहित्य को लेकर काफी चर्चाएं हो रही हैं। दलित चेतना की विशेषता है उसका विरोध का स्वर, पीड़ा की छटपटाहट, आक्रोश का तेवर और इसके साहित्य ही कहीं परिवर्तन के लिए उगता हुआ एक संकल्प। दलित साहित्य पर कई विद्वानों ने विचार किया है। मराठी दलित साहित्य में ऐसी परिभाषा मिलती है-'वह दलितोद्धार' के संबन्ध में दलितों के लिए लिखा गया साहित्य है। दलितों के प्रति दमन-अत्याचार अब भी चल रहा है।

इक्कीसवीं सदी में दलित साहित्य को लेकर काफी चर्चाएं हो रही हैं। दलित चेतना की विशेषता है उसका विरोध का स्वर, पीड़ा की छटपटाहट, आक्रोश का तेवर और इसके साहित्य ही कहीं परिवर्तन के लिए उगता हुआ एक संकल्प। दलित साहित्य पर कई विद्वानों ने विचार किया है। मराठी दलित साहित्य में ऐसी परिभाषा मिलती है-"वह दलितोद्धार" के संबन्ध में दलितों के लिए लिखा गया साहित्य है। दलितों के प्रति दमन-अत्याचार अब भी चल रहा है। डॉ. धर्मवीर लिखते हैं-"पिछले ३००० सालों से इस देश में शोर मच रहा है कि जाति मिट जायेगी।" सच यह है कि यह आज तक नहीं मिटी है। उल्टे जातिविहीन समाज की स्थापना का सपना द्विजों के उदारवाद के हाथ में एक हिपोक्रेसी का काम कर रहा है। दलित को इस सपने और वाग्जाल से बचना है। जाति में अपने माँ-बाप का नाम सम्मिलित रहता है। जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता। दलितों ने देश की प्रगति के अनुसार उनका जीवन स्तर भी ऊँचा करना चाहा।

आधुनिक हिन्दी दलित रचनाकारों में उल्लेखनीय हैं रत्नकुमार सांभरिया। उनकी २५० कहानियाँ एवं लघु कथाएं हैं। उनके प्रतिनिधि 'लघु कथा शतक' में दलित संवेदना देख सकते हैं। उनका लेखन बहुआयामी है। ग्रामीण परिवेश का स्पर्श और आँचालिक मुहावरों का पुट उनकी लघु कथाओं की विशेषता है।

दलित उनकी कहानी का पात्र बने हैं। उनकी लघुकथाओं के कथानक जमीनी गंध लिये हुए हैं। उनकी लघुकथाएं, अनैतिकता, मूल्यहीनता, क्रोध, आक्रोश से ऊपर उठकर सादगी, भलमनसाहत, सौहार्द, समन्वय और शिष्टाचार का समावेश करती हैं।

सामाजिक शोषण का शिकार बननेवाला लोगों का प्रतीक है उनकी कहानी 'अंतरे का घोड़ा' जैसे घोड़े की पीठ पर दिनभर पड़ी चाबुकें नीला बनकर उभर आई थीं। उसके एक-एक रोएं में लहू चुहचुहा रहा था। वह टीस के मारे बार-बार पैर पटकता था, गर्दन झटकता था। दलित लोग भी देश और समाज में कई अत्याचारों का सामना करते हैं। लेखक ने उन घोड़ों को दलितों का प्रतीक बनाया है।

उनका 'अहसास' नामक लघुकथा दलित संवेदना से ओत-प्रोत है। इसका कथ्य दो दोस्तों से जुड़ा है। जो ऊँच एवं नीच जाति के हैं। जातिगत भेद-भाव एवं छुआछूत का यथार्थ चित्र मिलता है। एक ही दफ्तर में काम करनेवालों सुदेश कुमार एवं बलवंत लाल जाति के नाम पर भिन्न हैं। अपने घर आया मेहमान है नीच जातिवाला बलवंत। चाय पिलाकर उसके चले जाने के बाद पत्नी वह बर्तन तोड़ डालती है।

"बलवंत जब चाय-पानी पीकर गेट से बाहर निकला तो सुदेश की पत्नी ने उन कप-प्लेटों को तोड़ दिया, जिन्हें बलवंत ने इस्तेमाल किया था।" अंतरंग मित्र होने पर भी सुदेश दलितों के प्रति उपेक्षा एवं असहमति देख पाते हैं। यही सामाजिक मनोभाव कथाकार खींचना चाहता है।

राम भरतपासी के शब्दों में दलित साहित्य-"एक संघर्ष है जड़ता के खिलाफ और उनके भी जो शोषण और मानवीय मूल्यों के हनन को अपनी नियति माने सदियों से स्पंदनहीन हैं।" सांभरिया की लघुकथा इस दृष्टि से दलित साहित्य का उत्तमदृष्टांत है। सदियों से शोषण सहनेवाले मजदूरिन का चित्रण 'आटे की पुड़िया' कहानी में मिलता है। मजदूरिन जो हमेशा काम करती है लेकिन जीवन में संघर्ष एवं अभाव भोगना पड़ता है उसे अपने बच्चे की भूख मिटाना बहुत मुश्किल होता है। जैसे 'आटे की पुड़िया', की शुरुआत मजदूरिन थी। उम्र से जवान। काया से अधेड दुःखों में डूबी उसकी